NEERAJ®

M.H.D. -6

हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Dr. Ram Vilas Gupt,* **M.A., Ph.D.**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 400/-

Content

हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास

Question Paper—June-2024 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—June-2023 (Solved) 1-3
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-3
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1-4
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-5
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1-4

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

हिन्दी साहित्य के इतिहास की भूमिका और आदिकाल

1. काल-विभाजन और नामकरण 1
2. आदिकाल की पृष्ठभूमि 13
3. सिद्ध, नाथ और जैन साहित्य 21
4. रासो काव्य एवं लौकिक साहित्य 30

भक्तिकालीन साहित्य

5. भक्तिकाल की पृष्ठभूमि 41
6. निर्गुण ज्ञानमार्गी संत काव्यधारा 50
7. निर्गुण प्रेममार्गी सूफी काव्यधारा 60

8. कृष्ण-भक्ति काव्य 67

9. राम-भक्ति काव्य 77

रीतिकालीन साहित्य

10. रीतिकालीन कविता की पृष्ठभूमि और आधार 84

11. रीतिकालीन कविता का स्वरूप 90

आधुनिक साहित्य–I

12. आधुनिक काल के साहित्य की पृष्ठभूमि 98

13. भारतेन्दु युग 103

14. द्विवेदी युग 109

15. छायावाद 115

आधुनिक साहित्य–II

16. उत्तर-छायावादी कविता 123

17. प्रगतिशील साहित्य 129

18. प्रयोगवाद और नयी कविता 135

19. समकालीन कविता 141

आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य

20. हिन्दी कथा-साहित्य 147

21. हिन्दी नाट्य साहित्य 156

22. हिन्दी आलोचना 160

23. निबन्ध एवं अन्य गद्य विधाएं 164

24. उर्दू साहित्य का परिचय 174

भारतीय आर्य भाषाएं

25. विश्व की भाषाएं और भारतीय भाषा-परिवार 222
26. भारोपीय परिवार और भारतीय आर्य भाषाएं 239
27. संस्कृत से अपभ्रंश तक 241
28. आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास 242

हिन्दी भाषा का विकास

29. हिन्दी भाषा का विकास–I 244
30. हिन्दी भाषा का विकास–II 245
31. हिन्दी भाषा का रूप-विकास 246
32. देवनागरी लिपि का विकास 247

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास

M.H.D.-6

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. हिन्दी साहित्य के इतिहास में आदिकाल के नामकरण की समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-6, 'आदिकाल का नामकरण'

प्रश्न 2. भक्तिकाल की पृष्ठभूमि का उल्लेख करते हुए भक्ति आन्दोलन के अखिल भारतीय स्वरूप की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-41, 'राजनीतिक पृष्ठभूमि', पृष्ठ-42, 'आर्थिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि', पृष्ठ-43, 'धार्मिक पृष्ठभूमि', 'दार्शनिक पृष्ठभूमि', पृष्ठ-47, 'भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप'

प्रश्न 3. सूफी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-63, 'सूफी प्रेमाख्यानक काव्य-परंपरा', पृष्ठ-64, 'भाव व्यंजना तथा रस निरूपण', पृष्ठ-65, 'काव्य भाषा, अलंकार एवं छंद विधान'

प्रश्न 4. रीतिकालीन कविता की प्रवृत्तियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-86, 'रीतिकालीन काव्य का आधार', अध्याय-11, पृष्ठ-90, 'रीतिसिद्ध काव्य', 'रीतिसिद्ध काव्य', पृष्ठ-94, 'रीतिमुक्त काव्य'

प्रश्न 5. पुनरुत्थान की अवधारणा स्पष्ट करते हुए बताइए कि उसने आधुनिक हिंदी साहित्य को किस रूप में प्रभावित किया।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-102, 'पुनरुत्थानवाद, नवजागरण और आधुनिक्ता'

प्रश्न 6. द्विवेदीयुगीन हिन्दी कविता की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-112, 'द्विवेदीयुगीन कविता'

पश्न 7. आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास में प्रगतिवाद के योगदान पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-17, पृष्ठ-129, 'प्रगतिशीलता का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य', पृष्ठ-132, 'प्रगतिशील साहित्य का उदय', 'हिंदी में प्रगतिशील काव्य की परंपरा' पृष्ठ-133, 'प्रगतिशील कविता की प्रवृत्तियाँ'

प्रश्न 8. हिन्दी कहानी की विकासयात्रा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-20, पृष्ठ-147, 'हिंदी कहानी'

प्रश्न 9. हिन्दी भाषा की विकासयात्रा का परिचय देते हुए उसकी प्रमुख बोलियों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-29, पृष्ठ-244, 'हिंदी भाषा का विकास-I', अध्याय-30, पृष्ठ-245, 'हिंदी भाषा का विकास-II'

इसे भी देखें–हिन्दी के अंतर्गत आने वाली उपभाषाओं एवं बोलियों का विवरण निम्नवत हैं–

उपभाषाएँ	बोलियाँ
1. पश्चिमी हिन्दी	खड़ी बोली (कौरवी), ब्रजभाषा, बुन्देली, हरियाणवी (बांगरू), कन्नौजी।
2. पूर्वी हिन्दी	अवधी , बघेली, छत्तीसगढ़ी।
3. राजस्थानी	मारवाड़ी, जयपुरी, मेवाती, मालवी।
4. पहाड़ी	गढ़वाली, कुमायूंनी, नेपाली।
5. बिहारी	मैथिली, मगही, भोजपुरी।

इस प्रकार हिन्दी क्षेत्र में पाँच उपभाषाएँ और अठारह बोलियाँ सम्मिलित हैं। इन बोलियों का क्षेत्र निम्न प्रकार है–

1. खड़ी बोली–खड़ी बोली का क्षेत्र देहरादून, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बिजनौर, रामपुर तथा मुरादाबाद है। इसका एक अन्य नाम कौरवी भी है।

2. ब्रजभाषा–आगरा, मथुरा, अलीगढ़, मैनपुरी, एटा, हाथरस, बदायूं, बरेली, धौलपुर, जिले ब्रजभाषा क्षेत्र में हैं।

3. हरियाणवी–हरियाणा प्रदेश तथा दिल्ली का देहाती क्षेत्र इस बोली का क्षेत्र है। इसे बांगरू बोली भी कहा जाता है।

4. बुन्देली–यह बुन्देलखण्ड की बोली है। झांसी, जालौन, हमीरपुर, ओरछा, सागर, नृसिंहपुर, सिवनी, होशंगाबाद जिले इसके क्षेत्र में हैं।

5. कन्नौजी–इटावा, फर्रुखाबाद, शहजहांपुर, हरदोई, पीलीभीत जिले इसके क्षेत्र में हैं।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

6. अवधी–कानपुर, लखनऊ, बाराबंकी, उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर, फतेहपुर, फैजाबाद, गौंडा, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर जिले।

7. बघेली–इसका केंद्र रीवा है। इसके अतिरिक्त शहदोल, सतना, मैहर, नागौद क्षेत्र में यह बोली जाती है।

8. छत्तीसगढ़ी–बिलासपुर, दुर्ग, रायपुर, रायगढ़, नन्दगांव, काकेर, सरगुजा, कोरिया में बोली जाती है।

9. मारवाड़ी–जोधपुर, अजमेर, किशनगढ़, मेवाड़, जैसलमेर, बीकानेर में यह बोली जाती है।

10. मैवाती–इसे उत्तरी राजस्थानी भी कहा जाता है। यह बोली राजस्थान के मेवात क्षेत्र में बोली जाती है।

11. जय पुरी–यह बोली जयपुर, अजमेर की बोली है। इस बोली का एक नाम ढूंढाणी भी है।

12. मालवी–यह मालवा क्षेत्र की बोली है तथा इंदौर, उज्जैन, देवास, रतलाम, भोपाल के क्षेत्र में बोली जाती है।

13. पश्चिमी पहाड़ी (नेपाली)–यह बोली हिमाचल प्रदेश के शिमला, मण्डी, चम्बा, जौनसार, सिरमौर इलाके में बोली जाती है।

14. गढ़वाली–यह गढ़वाल क्षेत्र की बोली है, उत्तरकाशी, बदरीनाथ, श्रीनगर (गढ़वाल) क्षेत्र में इसका बोलबाला है।

15. कुमायुंनी–उत्तरांचल का कुमायूं क्षेत्र इस बोली का क्षेत्र है। नैनीताल, अल्मोड़ा, रानीखेत में यह बोली बोली जाती है।

16. भोजपुरी–यह बोली वाराणसी, जौनपुर, गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, बस्ती, शाहाबाद चम्पारन, सारन में बोली जाती है।

17. मगही–यह बोली पटना, गया, पलामू, हजारीबाग, मुंगेर, भागलपुर, सारन में बोली जाती है।

18. मैथिली–बिहारी हिन्दी के अंतर्गत आने वाली यह बोली दरभंगा, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया और मुंगेर में बोली जाती है।

प्रश्न 10. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) रासो काव्य

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-32, 'रासो साहित्य की पृष्ठभूमि', 'रासो साहित्य में विचारणीय बिंदु'

(ख) रामकाव्य परम्परा

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-77, 'रामकाव्य परंपरा'

(ग) उत्तर-छायावादी कविता

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-16, पृष्ठ-122, 'प्रस्तावना', 'पृष्ठभूमि'

(घ) संस्मरण

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-23, पृष्ठ-167, 'संस्मरण'

(ङ) उर्दू साहित्य

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-24, पृष्ठ-174, 'प्रस्तावना'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

NEERAJ®

एम. एच. डी. - 6
हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास

खण्ड-1 हिन्दी साहित्य के इतिहास की भूमिका और आदिकाल

विभाजन और नामकरण

1

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य
1.1 प्रस्तावना
1.2 पण्ष्ठभूमि
1.3 काल-विभाजन की समस्याएं
1.4 काल-विभाजन के आधार
1.5 नामकरण के आधार
1.6 हिन्दी साहित्य में प्रचलित काल-विभाजन और नामकरण
1.7 आदिकाल का सीमा-निर्धारण
1.8 आदिकाल का नामकरण
1.9 भक्तिकाल काल : काल विभाजन और नामकरण
1.10 रीतिकाल का सीमा-निर्धारण
1.11 रीतिकाल : नामकरण
1.12 आधुनिक काल की पण्ष्ठभूमि
1.13 आधुनिक काल संवेदना के आधार
1.13.1. भारतेन्दु युग का काल-विभाजन और नामकरण
1.13.2. द्विवेदी युग
1.13.3. छायावाद
1.13.4. छायावादोत्तर
1.14. सारांश
1.15 अभ्यास प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के इतिहास को अब हम देखते हैं तब हमारे लिए सबसे बड़ी कठिनाई यह सामने आ जाती है कि लगभग ए क हजार वर्षों के लम्बे इतिहास को कैसे हम समझें । इसी तरह हमारे लिए एक बहुत बड़ा प्रश्न आ जाता है कि इस लम्बे साहित्य के इतिहास के काल-विभाजन और नामकरण की अनिवार्यता क्या है ? इसे इतिहास के किस प्रकार के तथ्यों से पुष्ट किया जाता है ? यह प्रश्न भी कि क्या इतिहास का कोई कालखण्ड या युग इतिहास की तथ्यगत सच्चाई को प्रदर्शित करता है या इतिहासकार अपनी सोच-समझ से इसे प्रस्तुत करता है । इस प्रकार के ढेर सारे प्रश्नों का समाधान करते हुए ही हम इतिहास का सही विभाजन कर सकते हैं । इससे हम इतिहास के काल-विभाजन के आधारों को समझ सकते हैं ।

1.2 पण्ष्ठभूमि

इतिहास बोध को हम आलोचनात्मक चेतना कह सकते हैं । यह चेतना जीवन और संस्कृति की पर्यवेक्षिका स्वरूप होती है । इससे समाज और साहित्य के परस्पर सम्बन्धों को हम भली-भाँति समझ लेते हैं । इसलिए साहित्य का इतिहासकार इन परस्पर सम्बन्धों परिवर्तनों का जितनी गहराई से अनुभव करेगा, वह उतना ही प्रमाणिक काल विभाजन प्रस्तुत करेगा । इसीलिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की प्रखर आलोचनात्मक दृष्टि की ओर हम बार-बार देखते हैं । उन्होंने अपने शोधपूर्ण ग्रन्थ *'हिन्दी साहित्य का इतिहास'* में लिखा है –

"शिक्षित जनता की जिन-जिन अवृत्तियों के अनुसार हमारे सहित्य के स्वरूप में जो-जो परिवर्तलन होते आए हैं, जिन-जिन प्रभावों की प्रेरणा से काव्यधारा की भिन्न-भिन्न शाखाएँ फूटती रही हैं, उन सबके सम्यक् निरूपण तथा उनकी दृष्टि से किए हुए सुसंगत काल-विभाजन के बिना साहित्य के इतिहास का सच्चा अध्ययन कठिन दिखाई पड़ता था । सात-आठ सौ वर्षों की संचित ग्रंथ राशि सामने लगी हुई थी, पर ऐसी निर्दिष्ट सारणियों की उद्भावना नहीं हुई थी, जिसके अनुसार सुगमता से प्रभूत सामग्री का वर्गीकरण होता ।"

उपर्युक्त कथन का अभिप्राय यही है कि ठोस इतिहास की दृष्टि से ही सुसंगत काल-विभाजन किया जा सकता है । इससे ही इतिहास का अध्ययन सुगम हो सकता है ।

1.3 काल-विभाजन की समस्याएँ

इतिहास या समाजशास्त्र में किसी घटना को आधार बनाकर एक रेखा खींची जा सकती है । उदाहरण के लिए, इतिहास में पुनर्जागरण का आरंभ सामान्यतः तुर्कों के हाथों कुस्तुनतुनिया की हार के समय से स्वीकार किया जाता है । लेकिन साहित्य के इतिहास लेखक के लिए साहित्यिक रुझान को समझना कठिन होता है । इसका यही कारण है कि साहित्यिक रुझान के परिवर्तन का कोई समय तय नहीं होता है । इस प्रकार की प्रवृत्ति को आधार बना लिया जाए, तो यह देखा जा सकता है कि जब साहित्य में एक प्रकार की प्रवृत्ति गतिशील होती है, तो उसके समानान्तर कभी-कभी प्रतिरोधी प्रवृत्ति भी गतिशील हो उठती है । इससे काल-विभाजन की बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो जाती है ।

काल-विभाजन की दूसरी समस्या संक्रति काल को लेकर होती है । संक्रमण काल के जिन बिन्दुओं पर इतिहास के दो युगों को तोड़ा जाता है, वहाँ इतिहासकार की चिन्तनधारा ही विच्छिन्न नहीं होती है, अपितु इस टूटने की प्रक्रिया में बहुत कुछ दूर हो जाता है ।

काल-विभाजन की तीसरी समस्या है–साहित्य के इतिहास में और राजनीतिक इतिहास में समानता को मान लेना । इससे सही काल-विभाजन नहीं हो सकता है ।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

1.4 काल-विभाजन के आधार

हिन्दी-साहित्य के इतिहास के अध्ययन की सुविधा के लिए कुछ विद्वानों ने इसे कुछ विशिष्ट कालखंडों में विभाजित किया है । काल-विभाजन से साहित्य की मुख्य धाराओं के विषय-बोध में वैज्ञानिकता और सैद्धान्तिक गम्भीरता का पुट आ जाता है । सामान्यतः किसी भी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन कृति, कर्ता, पद्धति या शैली तथा विषय के आधार पर किया जाता है । जब किसी काल में प्रवृत्ति का मुख्य आधार नहीं मिलता, तो उस युग के सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण साहित्यकार के नाम से उस सम्पूर्ण कालखंड की साहित्यिक विशेषताओं को जानने का प्रयास किया जाता है । काल-विभाजन के लिए यदि कोई विशिष्ट आधार नहीं मिलता, तब समग्र काल को आदि, मध्य और आधुनिक काल में विभाजित कर लिया जाता है । इस प्रकार का काल-विभाजन पर्याप्त रूप से प्रचलित है, परन्तु यह वैज्ञानिक कसौटी पर खरा नहीं उतरता । वस्तुतः हिन्दी-साहित्य के इतिहास के अध्ययन के लिए प्रवृत्तियों पर आधारित काल-विभाजन ही अधिक उचित कहा जा सकता है, जैसे–भक्तिकाल, रीतिकाल आदि ।

हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थों में काल-विभाजन के लिए चार पद्धतियों का सहारा लिया गया है । पहली पद्धति के अनुसार सम्पूर्ण इतिहास का विभाजन चार युगों या कालखण्डों में किया गया है– (1) आदिकाल, (2) भक्तिकाल, (3) रीतिकाल, और (4) आधुनिक काल । आचार्य शुक्ल और उनके अनुयायियों ने नागरी प्रचारिणी सभा के इतिहास ग्रन्थों में इसी परम्परा को अपनाया है । दूसरी पद्धति में केवल तीन युगों– (1) आदिकाल, (2) मध्यकाल, और (3) आधुनिककाल में कल्पना की है । डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त तथा भारतीय हिन्दी परिषद् के विद्वान् लेखकों ने इसे स्वीकार किया है । इसके पीछे उनका तर्क यह है कि मध्यकालीन चेतना प्रायः एक सी रही है । तीसरी पद्धति साहित्य का विभाजन विधाक्रम से करती है । यह पद्धति साहित्यशास्त्र के अनुकूल है । इस प्रकार के अनेक इतिहास अथवा खण्ड इतिहास हिन्दी में उपलब्ध हैं । एक और पद्धति है, जो शुद्ध कालक्रम के अनुसार वस्तुगत विभाजन को ही यथार्थ एवं वास्तविक स्वीकार करती है ।

चूंकि साहित्य के इतिहास में युग चेतना और साहित्य चेतना का अनिवार्य योग रहता है अतः साहित्य के विभाजन में भी ऐतिहासिक कालक्रम और साहित्य विधा दोनों का आधार ग्रहण करना होगा । इस समन्वय पद्धति को स्वीकार कर लेने पर हिन्दी साहित्य के काल-विभाजन की समस्या का समाधान बहुत कुछ हो जाता है । सातवीं से लेकर ग्यारहवीं सदी तक प्राप्त कृतियों की भाषा या तो अपभ्रंश है या हिन्दी की

कोई उपभाषा है । ग्यारहवीं से लेकर चौदहवीं सदी तक का काव्य सामन्तीय एवं धार्मिक इन दो अनगढ़ भूमियों के मध्य प्रवाहित रहा । इसके पश्चात् भक्ति का द्वितीय चरण (युग) आरम्भ हो जाता है । इसके कालखण्ड के सम्बन्ध में दो मत हैं । एक वर्ग के विद्वान् सत्रहवीं शताब्दी के मध्य तक एक काव्यधारा को तथा सत्रहवीं सदी के मध्य से उन्नीसवीं सदी तक दूसरी काव्यधारा को स्वीकार करते हैं । दूसरे वर्ग के विद्वान् सम्पूर्ण कालखण्ड को एक ही काल सीमा में स्वीकार कर लेते हैं तथा दूसरी काव्यधारा की दो प्रवृत्तियों को अलग-अलग नाम दे देते है। इसमें दूसरा मत ही अधिक मान्य हैं । सन् 1857 की क्रांति भारत के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण घटना थी । राष्ट्रीय एवं राजनीतिक चेतना का यह आन्दोलन वास्तव में मध्ययुग की समाप्ति और आधुनिक युग के आरम्भ का प्रथम उद्घोष था । अतः आधुनिक युग का आरम्भ सन् 1857 ई. के पश्चात् माना जा सकता है ।

1.5 नामकरण के आधार

यह एक स्वाभाविक प्रश्न है युगों के नामकरण का । आचार्य शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास को वीरगाथाकाल (भक्ति काल, रीति काल), मध्य काल, आधुनिक काल इस प्रकार विभाजित किया । उन्होंने जॉर्ज ग्रियर्सन तथा मिश्र बन्धुओं से अवश्य ही संकेत ग्रहण किया है। पर, नामकरण और उसके तर्क के पीछे उनकी अपनी व्याख्या है । शुक्ल जी के नामकरण से भक्ति काल या आधुनिक काल को यथावत् स्वीकार कर लिया गया है, परन्तु वीरगाथा काल और रीति काल के विषय में विवाद रहे हैं । 'वीरगाथा काल' के नामकरण के सन्दर्भ में आपत्ति मुख्यतया यह है कि इस काल की अधिकांश रचनाएँ अप्राप्य हैं तथा कुछ रचनाएँ परवर्ती काल की हैं । इस काल के कथ्य और माध्यम के रूपों में भी विविधता एवं अव्यवस्था है । ऐसी स्थिति में किसी एक प्रवृत्ति के आधार पर उनका नामकरण नहीं किया जा सकता है । रीतिकाल के सम्बन्ध में मतभेद की परिधि सीमित है । यहाँ विवाद का विषय इतना ही है कि इस युग में रीति तत्व प्रमुख है या श्रृंगार तत्त्व 'श्रृंगार काल' नामकरण करने पर अतिव्याप्ति दोष आ जाता है । चूँकि श्रृंगार भी रीतिबद्ध था । अतः रीति ही यहाँ प्रमुख है । आधुनिक काल को शुक्लजी ने प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय उत्थान कहा है । इनको क्रमशः भारतेन्दु काल तथा द्विवेदी काल कहा जा सकता है । तृतीय उत्थान को उन्होंने कोई नाम नहीं दिया । इसका कारण समभवतः इस काव्यधारा का प्रवाहमय रूप रहा ।

1.6 हिन्दी साहित्य में प्रचलित काल-विभाग और नामकरण

हिन्दी-साहित्य के प्रारम्भिक इतिहासकारों – गार्सा द तासी तथा शिवसिंह सेंगर – ने काल-विभाजन की ओर ध्यान नहीं दिया । सर्वप्रथम जॉर्ज ग्रियर्सन ने अव्यवस्थित ढंग से हिन्दी-साहित्य के इतिहास को काल-क्रम देने का प्रयास किया था । ग्रियर्सन ने चारण काल, पन्द्रहवीं शती का धार्मिक पुनर्जागरण, जायसी की प्रेम कविता, ब्रज का कृष्ण सम्प्रदाय, मुगल दरबार, तुलसीदास, रीति-काव्य, अठारहवीं शताब्दी, कम्पनी के शासन में हिन्दुस्तान आदि शीर्षकों में साहित्य का काल-विभाजन किया । हमारे दृष्टिकोण से इसे काल-विभाजन कहना उचित नहीं है । वास्तव में ये विभिन्न अध्यायों के केवल शीर्षक मात्र हैं । इनमें कालक्रम की निरन्तरता भी नहीं है । इसके पश्चात् मिश्र बन्धुओं ने हिन्दी-साहित्य का काल-विभाजन किया । उनके द्वारा प्रस्तुत काल-विभाजन निम्नलिखित है–

(1) आरम्भिक काल	(क) पूर्वारम्भिक काल (700 से 1343 वि०) (ख) उत्तरारम्भिक काल (1344 से 1444 वि०)
(2) माध्यमिक काल	(क) पूर्व माध्यमिक काल (1445 से 1560 वि०) (ख) प्रौढ़ माध्यमिक काल (1561 से 1680 वि०)
(3) अलंकण्त काल	(क) पूर्वालंकृत काल (1681 से 1790 वि०) (ख) उत्तरालंकृत काल (1791 से 1889 वि०)
(4) परिवर्तन काल	(1890 से 1925 वि०)
(5) वर्तमान काल	(1926 वि० से अध्यावधि)

हिन्दी साहित्य इतिहास लेखन की परम्परा में सर्वोच्च एवं महत्त्वपूर्ण स्थान रामचन्द्र शुक्ल और उनके 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' का है । यह ग्रन्थ मूलतः 'नागरी प्रचारिणी सभा' द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी शब्द सागर' की भूमिका के रूप में लिखा गया था, जिसे कालान्तर में परिवर्द्धित एवं संशोधित करके स्वतन्त्र पुस्तक का रूप दिया गया । इसके आरम्भ में ही शुक्ल जी लिखते हैं–"जब कि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है । आदि से अन्त तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहित्य परम्परा के साथ उनका

सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है। जनता की चित्तवृत्तियां बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती हैं।" अपने इस कथन में शुक्लजी ने साहित्य के इतिहास लेख के प्रति एक निश्चित तथा सुस्पष्ट अवधारणा का परिचय दिया है। उनकी दृष्टि वैज्ञानिक तथा विकासवादी रही है। उन्होंने हिन्दी साहित्य के नौ सौ वर्षों के इतिहास को चार खण्डों (कालों) में विभाजित कर दिया।

(1) आदि काल (वीरगाथा काल, संवत् 1050 से 1375 वि०)
(2) पूर्व-मध्य काल (भक्ति काल, संवत् 1375 से 1700 वि०)
(3) उत्तर-मध्य काल (रीति काल, संवत् 1700 से 1900 वि०)
(4) आधुनिक काल (गद्य काल, संवत् 1900 से अब तक)

आचार्य शुक्ल ने सम्पूर्ण भक्ति काल को शुद्ध दार्शनिक एवं धार्मिक आधार पर प्रतिष्ठत किया। अपने इतिहास में शुक्लजी ने कवियों और साहित्यकारों के जीवन-चरित सम्बन्धी इतिवृत्त के स्थान पर उनकी कृतियों के साहित्यिक मूल्यांकन को प्रमुखता दी है। हिन्दी साहित्य-इतिहास के लेखन में शुक्लजी का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के पश्चात् आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' में विभिन्न तथ्यों और निष्कर्षों का प्रतिपादन किया है। यह तथ्य हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन की 'परम्परा' में नवीन दृष्टि, नवीन सामग्री और नई व्याख्या प्रदान करते हैं। आचार्य द्विवेदी ने युगीन परिस्थितियों को नकार कर परम्परा पर विशेष बल दिया। इसी परम्परा में द्विवेदीजी की अन्य लिखित कृतियों में 'हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास', 'हिन्दी साहित्य का आदि काल' हैं। इनमें द्विवेदीजी ने हिन्दी साहित्य के इतिहास की पूर्व परम्पराओं के अनुसन्धान तथा उसकी सहानुभूतिपूर्ण यथातथ्य व्याख्या की है।

ऐतिहासिक चेतना एवं पूर्व परम्परा बोध की दृष्टि से द्विवेदीजी हिन्दी के सबसे अधिक सशक्त इतिहासकार हैं। उनका काल-विभाजन, काव्यधारा की नियोजना और इतिहास की रूपरेखा आचार्य शुक्ल के इतिहास के अनुरूप है।

डॉ० रामकुमार वर्मा ने अपने 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' नामक ग्रन्थ में सात प्रकरणों के आधार पर हिन्दी साहित्य के सन् 693 ई० 1693 ई० तक के समय को सन्धि काल, चारण काल, भक्ति काल की अनुक्रमणिका, भक्ति काल, प्रेमकाव्य, रामकाव्य, कृष्णकाव्य में बाँटा है। उन्होंने ने स्वयंभू को हिन्दी का पहला कवि स्वीकार किया है। डॉ० रामकुमार वर्मा ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहितय का ऐतिहासिक अनुशीलन' में हिन्दी साहित्य का काल-विभाजन इस प्रकार किया है–

1. सन्धि-काल–सं० 750 से प्रारम्भ; इसमें अपभ्रंश और जन-भाषा की सन्धि में विविध धार्मिक सम्प्रदायों का प्रवर्तन हुआ।

2. चारण-काल–प्रारम्भ सं० 1000; इसमें चारणों ने स्वदेशाभिमानी नरेशों की प्रशस्तियाँ लिखी हैं।

3. प्रेम कथा या लोक कथा-काल–इस काल में आदर्श प्रेम की लोकरंजनकारिणी कथाएं लिखी गईं।

4. भक्ति-काल–प्रारम्भ संवत् 1300; इसमें आध्यात्मवाद के देशव्यापी आन्दोलन और उसकी शाखा-प्रशाखाओं का साहित्य है।

5. कला काल–प्रारम्भ संवत् 1700; भक्ति का शृंगार भाव में परिवर्तित होना।

6. प्रबुद्ध-काल–प्रारम्भ सं० 1900; ज्ञान के विविध क्षेत्रों में विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति का जागृत होना, जीवन से सम्बद्ध समस्त विषयों पर साहित्य सृजन।

'नागरी प्रचारिणी सभा, काशी' द्वारा 'हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास' सोलह भागों में अलग-अलग विद्वानों के सम्पादन में तथा विभिन्न लेखकों के सहयोग से प्रकाशित किया गया है। इस ग्रन्थ के लेखन-सम्पादन में कुछ सामान्य सिद्धान्तों, काव्य पद्धतियों का निर्धारण किया गया है। इस योजना के द्वारा हिन्दी साहित्य इतिहास की बिखरी हुई सामग्री को सूत्रबद्ध किया गया है।

विभिन्न विद्वानों के सहयोग से लिखित इतिहास ग्रन्थों में डॉ० धीरेन्द्र वर्मा के सम्पादन में प्रकाशित हिन्दी साहित्य तथा डॉ० नगेन्द्र के सम्पादन में प्रकाशित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं। इन दोनों ही ग्रन्थों में प्रत्येक काल की काव्य परम्पराओं का विवरण अविच्छिन्न रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इसी परम्परा में डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त का 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास', हरिश्चन्द्र वर्मा का 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' भी हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दी साहित्य के विविध कालखण्डों या सम्प्रदायों को लेकर भी अनेक शोध-प्रबन्ध तथा समीक्षा ग्रन्थ लिखे गए हैं। यह कृतियाँ हिन्दी साहित्य के सम्पूर्ण इतिहास को नहीं, अपितु उसके किसी एक अंग, एक पक्ष या काल को नूतन ऐतिहासिक दृष्टि तथा नवीन वस्तु प्रदान करती हैं। इनमें डॉ० नगेन्द्र का "रीतिकाल की भूमिका", श्री परशुराम चतुर्वेदी का "उत्तरी भारत की सन्त काव्य परम्परा", डॉ० भगरीथ मिश्र का "हिन्दी काव्यशास्त्र पात्र का इतिहास", श्री प्रभुदयाल मीतल का "चैतन्य सम्प्रदाय और उसका साहित्य", डॉ० विजयेन्द्र स्नातक का "राधावल्लम सम्प्रदाय सिद्धान्त और साहित्य", श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का "हिन्दी साहित्य का अतीत, वाङ्मय विमर्श", श्री चन्द्रकान्त बाली

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com